Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 GISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

संस्कृत वाङ्मय और ज्योतिष

डॉ.अभिषेक दत्त त्रिपाठी

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

का0 सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

शोध-सारांश - संस्कृत वाङ्मय और ज्योतिष का संबंध अत्यंत प्रगाढ़ और अटूट है। ज्योतिष वेद के अंगों में एक अभिन्न अंग है, जिस प्रकार वेदांगों में शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, और व्याकरण का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, उसी प्रकार ज्योतिष भी वेदांगों में मुख्य स्थान रखता है। यदि किसी व्यक्ति के नेत्र ही ना हो, व्यक्ति अंधा हो, तो उसके लिए संपूर्ण संसार अंधकारमय हो जाता है जीवन के रस, रंग से वह विहीन व्यक्ति मृत्यु तुल्य कष्ट पाता है, जिस प्रकार एक व्यक्ति के जीवन में नेत्रों का जो महत्व है वही महत्व वेदांगों में ज्योतिष का है, इसी से समझा जा सकता है कि ज्योतिष शास्त्र कितना महत्वपूर्ण है। वैसे तो ज्योतिष शास्त्र को समझने के लिए दिन, महीने, वर्ष भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि ज्योतिष एक महाविज्ञान है, इसका प्रतिदिन अध्ययन करते रहने से ही इसको समझा जा सकता है। फिर भी मैंने एक छोटा सा प्रयास अपने इस शोधपत्र के माध्यम से किया है कि ज्योतिष शास्त्र कि कुछ तथ्य सुधिजनों के सम्मुख लाए जा सकें।

मुख्य शब्द- करण, वार, पंचांग, कुंडली, नक्षत्र, तिथि, मुहूर्त, भाव।

संस्कृत वाङ्मय अत्यंत विशाल, बृहद् और एक वटवृक्ष की भांति है। अत्याधुनिक समाज में संस्कृत भाषा को बहुत ही हेय दृष्टि से देखा जाता है, परंतु वे जो संस्कृत की महत्ता को जानते-पहचानते नहीं हैं, अज्ञानी हैं । हमारी भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपरा और साहित्य सभी संस्कृत भाषा में ही निबद्ध हैं, चाहे वह वेद हो, उपनिषद हो, ब्राह्मण, आरण्यक हों, रामायण, महाभारत समस्त महाकाव्य षड्दर्शन और वेदांग सभी संस्कृत भाषा में है। वेदांगों में शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, व्याकरण और ज्योतिष आते हैं।

वेदांगों में ज्योतिष का अपना महत्वपूर्ण स्थान है, ज्योतिष को वेदांग में चक्षु (नेत्र) की संज्ञा प्रदान की गई है, अर्थात् ज्योति का अर्थ है प्रकाश जिसमें सब कुछ दिखाई दे। मनुष्य प्रारंभ से ही अपने भूत, भविष्य और वर्तमान को जानने और समझने के लिए जिज्ञासु रहा है, जिसका निदान उसे वेद के महत्वपूर्ण अंग ज्योतिष से प्राप्त होता है। ज्योतिष को और बल पंचांग प्रदान करते हैं, हमारे ऋषि-मुनियों ने भारतीय पंचांग का निर्माण किया था, जो ब्रह्मांड में स्थित समस्त ग्रहों उपग्रहों की सटीक गणना करना सिखाता है। इसी पंचांग से विवाह का, गृह प्रवेश का, व्यापार प्रारंभ करने का, किसी भी प्रकार का कोई शुभ कार्य करने का, इत्यादि मुहूर्त देखा जाता है। जो पूरी तरह से वैज्ञानिक और सटीक है। भारतीय पंचांग में ज्योतिष शास्त्र की इसी व्यवहारिक वैज्ञानिकता का सूक्ष्म अनुप्रयोग है। यहां किसी भी कार्य को संयोग पर नहीं छोड़ा जाता, अपितु इसके लिए एक विशिष्ट 'योग' एवं मुहूर्त का विधान होता है।[1] जैसे विवाह हेतु वर कन्या की प्रकृति के निर्धारण

एवं उसके मेलापक के लिए ब्रह्मांडीय प्रभावों की अनुकूलता हेतु व्रत-अनुष्ठान किया जाता है। किसी भी कार्य के प्रारंभ के लिए स्थानीय परिस्थितियों के साथ-साथ ब्रह्मांडीय प्रभावों का समेकन मुहूर्त एवं गृह अनुष्ठान के रूप में प्रचलित हैं।[2]

भारतीय ज्योतिष शास्त्र को धर्म शास्त्र से जोड़ा गया है। यह उसकी अपनी अलग विशेषता है। ज्योतिष शास्त्र अपने आप में एक महासागर है, इसके अंतर्गत वास्तु शास्त्र भी आता है, आज के समय में यदि किसी को अपने भवन का निर्माण करना होता है, तो बिना वास्तु की जानकारी किए वह अपने भवन का निर्माण किसी भी ऐसे व्यक्ति से नहीं कराना चाहता जिसे भवन निर्माण के रेखा चित्र को बिना वास्तु के ज्ञान के ही बना दिया हो, अत: भवन-निर्माण में वास्तु शास्त्र अत्यंत महत्वपूर्ण ही नहीं अति आवश्यक भी है।[3]

मनुष्य प्रारंभ से ही अत्यंत जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है, वह अपने भविष्य को लेकर अत्यंत सजग रहा है, अपने और अपने परिवार को लेकर व्यक्ति चिंतित रहता है, उसकी इसी परेशानी और चिंता को ज्योतिष शास्त्र दूर करता है। जब चंद्रमा का प्रभाव इतना होता है कि समुद्र में ज्वार और भाटा आ सकता है तो वह मनुष्य के मन पर भी अत्यंत प्रभाव डालता है, क्योंकि चंद्रमा को ज्योतिष शास्त्र में मन की संज्ञा से अभिहित किया गया है।

'चंद्रमा मनसो जात:'[4]

अत: जिस जातक का चंद्रमा जितना ही पीड़ित होगा, वह व्यक्ति मन से उतना ही अस्वस्थ होगा। ज्योतिष एक विज्ञान है, यदि किसी व्यक्ति की कुंडली सही बनी हो तो व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान की सटीक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। सूर्य और चंद्र को ज्योतिष शास्त्र में राजा की संज्ञा दी जाती है।[5]

सूर्य को आत्मा तो चंद्रमा को जातक का मन कहा जाता है। कुंडली में[1] भाव होते हैं। प्रत्येक भाव से कुछ न कुछ देखा जाता है। जैसे प्रथम भाव से व्यक्ति का शरीर, चेहरा, व्यक्तित्व। द्वितीय भाव से बैंक बैलेंस, वाणी। तृतीय भाव से भाई, पराक्रम। चतुर्थ भाव से हृदय रोग, माता, वाहन सुख। पंचम भाव से विद्या, संतान, षष्ठ भाव से ननिहाल पक्ष, शत्रु। सप्तम भाव से स्त्री, स्त्री सुख, विवाह। अष्टम भाव से मृत्यु, रोग, पेट। नवम भाव से भाग्य, पिता। दशम भाव से प्रशासनिक कार्य, राजनीतिक सफलता। ग्यारहवें भाव से आय, और बारहवें भाव से विदेश यात्रा, कर्जा इत्यादि।[6]

कुंडली के दशम और नवम भाव अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। त्रिकोणों में नवम और केंद्र के भाव में दशम अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इन्हीं 12 भावों में नवग्रह रहते हैं। जैसा कि पहले बताया गया है कि सूर्य आत्मा और चंद्रमा मन होता है, उसी प्रकार मंगल बल का, ताकत का कारक माना जाता है, क्योंकि मंगल को सेनापति कहा जाता है। मंगल से रक्त विकार का भी निर्धारण किया जाता है। मंगल के उच्च का होने से जातक पुलिस विभाग, सेना में जा सकता है या चिकित्सक भी बन सकता है। चंद्रमा मन के साथ-साथ औषधि का भी कारक होता है। बुद्ध बुद्धि का देवता है, इसके साथ-साथ वाणी को भी नियंत्रित करता है। गुरु ज्ञान का एवं सुख का स्वामी है। शुक्र विवाह का भोगेच्छा का या काम का स्वामी है। शनि प्रशासनिक कार्यों का, राजनीतिक गतिविधियों का स्वामी है। यदि शनि तुला राशि, धनु अथवा मीन राशि पर स्थित हो तो शनि उच्च का माना जाता है, ऐसा शनि अत्यंत शुभ फलदायक होता है। ज्योतिष शास्त्र को हम दो भागों में बांट सकते हैं। एक फलित दूसरा गणित। जब हम कुंडली का निर्माण पंचांग की सहायता से करते हैं तो वह गणित ज्योतिष के अंतर्गत

आता है, तथा उसी कुंडली का निर्माण करने के पश्चात जब हम उसका अध्ययन करते हुए जातक को उस कुंडली से उसका भूत, भविष्य और वर्तमान बताते हैं तो वह ज्योतिष का फलित पक्ष होता है।

ज्योतिष का हाथ और पैर यदि हम पंचांग को कहे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि पंचांग से ही हम कुंडली का निर्माण करते हैं, मुहूर्त देखते हैं, पंचांग का संधि विच्छेद करने पर हम समझ सकते हैं कि पंचांग में 5 अंगों का ही विशेष महत्व होता है। [7] अर्थात् काल निर्धारण के पांच प्रमुख अंग हैं- वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण।[8] इनमें सूर्य और चंद्र की स्थिति की प्रधानता होती है। पंचांग में यह प्रत्येक मास के विवरण में प्राय: प्रारंभ में रखे जाते हैं।

वार- दिनों के नाम को वार कहते हैं, जो भारतीय पद्धति के अनुसार क्रमश: सूर्य, चंद्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि के नाम पर सामान्यत: रविवार, चंद्रवार (सोमवार), मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार के नाम से जाने जाते हैं। इनका समय एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक होता है।

तिथि- तिथि सूर्य और चंद्रमा के अंतर से बनती है, क्योंकि सूर्य के प्रकाश से चंद्र की कलाओं (प्रकाशित अंशों) में अंतर होता रहता है। इन्हें कुल 30 भागों में विभाजित किया जाता है। इस प्रकार सूर्य और चंद्र के प्रत्येक° अंश पर एक तिथि बढ़ती है, जिन्हें क्रमश: प्रतिपदा (प्रथमा) द्वितीया आदि से लेकर अमावस्या तक कृष्ण पक्ष की तथा इसी प्रकार प्रतिपदा, द्वितीया तृतीया आदि से पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष की 15-15 तिथियां कही जाती है। संपूर्ण तिथियों को मिलाकर एक चंद्र मास होता है, जिसे पंचांग में अलग से चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन नामों से अलग-अलग प्रदर्शित किया जाता है।

नक्षत्र- पूरे आकाश मंडल को 12 राशियों के अतिरिक्त 27 नक्षत्रों में विभाजित किया गया है, जिनके नाम क्रमश: अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती है।

योग- सूर्य और चंद्र के स्पष्ट का योग (जोड़) ही योग कहा जाता है। वस्तुत: दोनों अंशों का जोड़ 800 कला का होता है। योग भी 27 होते हैं।

करण- सूर्य से चंद्र अंश जब आगे जाता है, तब एक करण होता है। एक दिन में दो कारण होते हैं। करण कुल 11 होते हैं इनमें से सात चर करण कहलाते हैं, जो महीने में आठ-आठ बार घूम कर आते हैं। इसके अतिरिक्त चार स्थिर करण होते हैं, जो महीने में एक बार आते हैं।

भारतीय पंचांग में दिन का आरंभ सूर्योदय से होता है, इसलिए सूर्योदय के समय जो वार, तिथि, योग तथा करण होते हैं उनका नाम संक्षेप में पंचांग में अंकित किया जाता है, इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय ज्योतिष की रीढ़ पंचांग ही है।

एक बार किसी जातक की कुंडली का निर्माण हो जाने पर उस कुंडली में स्थित ग्रहों के शुभाशुभ स्थितियों पर विचार किया जाता है। ग्रहों के बलाबल का भी सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया जाता है। ग्रहों की मित्र राशियाँ भी होती हैं, और शत्रु राशियाँ भी। कौन सा ग्रह अपनी मित्र राशि पर स्थित है और कौन सा ग्रह अपने शत्रु राशि पर स्थित है इसका भी

विचार किया जाना अत्यंत आवश्यक है। प्रत्येक ग्रह की अपनी स्वगत राशि भी होती है, जैसे मेष और वृश्चिक राशियॉ मंगल की मानी जाती हैं, चंद्र की कर्क राशि, सूर्य की सिंह राशि, बुध की मिथुन और कन्या राशि, गुरु की धनु और मीन राशि, शुक्र की वृष और तुला राशि, तो शनि की मकर और कुंभ राशि। जब कोई ग्रह स्वराशि पर रहता है तो वह शुभ फलदायक होता है। यदि कोई ग्रह नीच राशि पर बैठता है तो अशुभ फलदायक होता है, जैसे बुध के लिए मीन राशि नीच राशि मानी जाती है, सूर्य के लिए तुला राशि, गुरु के लिए मकर राशि नीच राशि मानी जाती है। मंगल, शनि, राहु, केतु को पाप ग्रह माना जाता है। बुध को नपुंसक ग्रह भी कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र में विवाह के समय मेलापक (वर और कन्या की कुंडली) का मिलान अत्यंत आवश्यक होता है और इसमें भी विशेष रूप से मंगली विचार। यदि वर मंगली हो और कन्या ना हो तो कन्या के जीवन को खतरा हो सकता है और यदि कन्या मंगली हो वर ना हो तो वर के जीवन पर संकट आ सकता है।

'लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे:।

कन्या भतुर्विनाशाय भर्ता पत्नी विनाशकृत्।।'[9]

अर्थात जिस जातक के 4,7,8 एवं 12 में स्थान में मंगल हो तो वह व्यक्ति अथवा कन्या को मंगली मानना चाहिए।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ज्योतिष एक महासागर है, अत्यंत बृहद् ज्ञान है, आकाशगंगा, ब्रह्मांड के अनंत ज्ञान को अपने अंदर इस ने समेटा हुआ है। दिन प्रतिदिन इसका अध्ययन करते रहने पर प्रत्येक दिन कुछ न कुछ नवीन ज्ञान हमारे सम्मुख आता है, इसलिए ज्योतिष को वेदांगों में स्थान दिया गया है। ज्योतिष शास्त्र की समस्त पुस्तकें उसका समस्त ज्ञान-विज्ञान संस्कृत भाषा में ही निबद्ध है, इसलिए संस्कृत वांग्मय संस्कृत भाषा को बिना जाने समझे ज्योतिष की गणनाओं को समझना दुरूह ही नहीं अत्यंत दुष्कर कार्य है, जो लगभग असंभव ही है। ज्योतिष में प्रवेश करने के लिए हमें संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. मुहूर्त मार्तंड
2. जातक पारिजात
3. मुहूर्त मार्तंड
4. जातक पारिजात
5. सिद्धांत शिरोमणि (भास्कराचार्य)
6. बृहत् पाराशर- होरा शास्त्र
7. मुहूर्त चिंतामणि
8. पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक
9. पौरोहित्य कर्म प्रशिक्षक (मंगली विचार)